धृतराष्ट्र की चिंता

प्र.१) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

अ) विदुर! मुझे अब तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं।

आ) विदुर की बुद्धिमत्ता का धृतराष्ट्र पर भारी प्रभाव था।

इ) विदुर के चले जाने पर धृतराष्ट्र और भी चिंतीत हो गए।

ई) आप यदि वापस नहीं लौटेंगे, तो वह अपने प्राण छोड़ देंगे।

उ) इसी तरह एक बार महर्षि मैत्रेय धृतराष्ट्र के दरबार में पधारे।

ऊ) इस अवसर पर दुर्योधन भी सभा में मौजुद था।

ऋ) दुर्योधन की इस ढिठाई को देखकर महर्षि बड़े क्रोधित हुए।

ऐ) मैं वचन देता हूँ कि पांडवों की हर प्रकार से सहायता करूँगा।

ओ) इसके बाद श्रीकृष्ण पांडवों से विदा हुए।

प्र.२) किसने किससे कहा।

अं) तुम्हीं, बताओं कैसे जा रहे हैं वे?"
धृतराष्ट्र ने विदुर से कहा।

आ) धृतराष्ट्र अपनी भूल पर पछता रहे हैं।
संजय ने विदुर से कहा।

इ) पांडवों को धोखा देने का विचार छोड़दो।
महर्षि मैत्रेय ने दुर्योधन से कहा।

ई) मेरा कोई नहीं रहा और आप भी मेरे न रहे।
द्रौपदी ने श्रीकृष्ण से कहा।

उ) वे कुशल से तो हैं।
धृतराष्ट्र ने विदुर से कहा।

ऊ) कुंती पुत्र युधिष्ठिर, कपड़े से चेहरा ढ़ककर जा रहे हैं।
विदुर ने धृतराष्ट्र से कहा।

ए) याद रखो अपने घमंड का फल तुम अवश्य पाओगे।
महर्षि मैत्रेय ने दुर्योधन से कहा।

प्र ③) समानार्थी शब्द लिखें।

अ) अनुसरण - पालन
आ) उपदेश - शिक्षण
इ) क्रोध - गुस्सा
ई) आदर - सम्मान
उ) प्रतीक्षा - राह
ऊ) घमंड - गुरूर
ए) अविरल - सतत
ऐ) विलाप - शोक
ओ) प्रतिज्ञा - संकल्प
औ) प्रभाव - परिणाम

प्र.④) दिए गए वाक्य विरामचिन्हांसमवेत फिरसे लिखें।

अ) विदुर पांडु के बेटे और द्रौपदी कैसे जा रहे हैं
"विदुर, पांडु के बेटे और द्रौपदी कैसे जा रहे हैं?

आ) विदुर अब मुझे तुम्हारे सलाह की जरूरत नहीं है।
"विदुर! अब मुझे तुम्हारे सलाह की जरूरत नहीं है।"

इ) धृतराष्ट्र अपनी भूल पर पछता रहे हैं।
"धृतराष्ट्र! अपनी भूल पर पछता रहे हैं।"

ई) दुर्योधन याद रखो तुम अपने घमंड का फल अवश्य पाओगे
"दुर्योधन! याद रखो, तुम अपने घमंड का फल अवश्य पाओगे।"

उ) बहन द्रौपदी जिन्होंने तुम्हारा अपमान किया है, उन सबकी लाशे युद्ध के मैदान में खून से लथपथ होकर पड़ेगी।
बहन द्रौपदी जिन्होंने तुम्हारा अपमान किया है, उन सबकी लाशे युद्ध के मैदान में खून से लथपथ होकर पड़ेगी।